प्रोफेसर राधाकमल मुकर्जी—सामाजिक मूल्य

डॉ वंदना एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र
बीएसएनवीपीजी कॉलेज लखनऊ

सामाजिक मूल्यों का महत्व-

डॉक्टर मुखर्जी का मानना है कि समाज में पाए जाने वाले उच्च स्तर के मूल्य हीसभ्य समाज की पहचान है जिसके अभाव मेंमानव काजीवन पशु जैसा हो जाएगा मूल्यों को व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है

1. सामाजिक संगठन एवं सामाजिक संरचना-सामाजिक मूल्य समाज में विशेष प्रकार के प्रतिमानित व्यवहारों को उत्पन्न करते हैं तथा समाज के सदस्य इस प्रतिमानित व्यवहार के अनुसार आचरण करते हैं जिससे सामाजिक संगठन एवं संरचना में एकता का निर्माण होता है मूल्य सामाजिक अंतर क्रिया या व्यवहार की व्यवस्था को बनाए रखता है।

व्यक्तित्व निर्माण में सहायक -

-सामाजिक मूल्य व्यक्तित्व निर्माण में विशेष योगदान देते हैं सामाजिकरण की प्रक्रिया में सामाजिक मूल्यों को आत्मसात किया जाता है व्यक्ति अपने आचरण एवं जीवन को मूल्यों के अनुसार ही बनाता है

सामाजिक भूमिकाओं के निर्माण में सहायक-

मूल्य ही व्यक्ति को बताता है कि किस प्रस्थिति से संबंधितभूमिका क्या है भूमिकाओं का निर्माण मूल्यों पर आधारित है किसी प्रस्थिति से संबंधित मूल्य द्वारा ही भूमिका का निर्वाहन व्यक्ति द्वारा किया जाता है।

अनुरूपता एवं विचलन का मापन-

सामाजिक मूल्यों के आधार पर ही किसी समाज में व्यक्ति द्वारा किए गए व्यवहार को सामाजिक मूल्यों के अनुरूप या विचलन कहा जाता है। बिजली के व्यवहार को मुखर्जी ने अप मूल्य की अवधारणा के द्वारा समझाया है।

सामाजिक मूल्य समाज के आदर्श विचार एवं व्यवहारों के वाहक हैं-
सामाजिक मूल्य किसी समाज में प्रचलित आदर्श विचार एवं व्यवहार का ही प्रतिरूप है सामाजिक मूल्य के अनुसार ही व्यक्ति के आदर्श एवं विचार निर्धारित होते हैं।
व्यक्तिगत एवं सामाजिक क्षमताओं का आकलन-

कोई व्यक्ति या समूह कितना समर्थ, क्षमता वान है इसका निर्धारण समाज में पाए जाने वाले सामाजिक मूल्यों के आधार पर किया जाता है।

अपमूल्यो की अवधारणा-

प्रोफ़ेसर राधा कमल मुकर्जी ने सामाजिक मूल्यों के साथ अप मूल्यों की अवधारणा दी है उनका मानना है कि समाज में मूल्यों की तरह अप मूल्य भी पाए जाते हैं।

समाज में पाए जाने वाले सामाजिक मूल्य मान्यताओं प्रतिमाओं का उल्लंघन , अस्वीकार्यता अपमूल्य है।जब समाज में पाई जाने वाली व्यवस्था में अव्यवस्था उत्पन्न होने लगती है तो अप मूल्यों की उत्पत्ति होने लगती है। समाज में पाए जाने वाले शोषण ,अत्याचार, अपराध ,चोरी ,हिंसा ,हत्या आदि अप मूल्य के उदाहरण हैं। प्रोफेसर मुकर्जी ने अप मूल्यों की उत्पत्ति में मुख्य रूप से तीन कारणों को सम्मिलित किया है।

जैवकीय कारण-
जब व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं जैसे रोटी कपड़ा आवास की पूर्ति आवश्यक रूप से नहीं हो पाता तो इससे संबंधित अप मूल्यों की उत्पत्ति होती है।

मानसिक कारण-

जब मनुष्य की मनोवैज्ञानिक अथवा मानसिक आवश्यकता की पूर्ति जैसे प्रेम प्रतिष्ठा सुरक्षा आदिनहीं हो पाता तो अपमूल्यो कीउत्पत्ति होती है। प्रेम में असफल होने पर अपनी या प्रेमिका की हत्या कर देना।

सामाजिक कारण-सामाज़िक आवश्यकताओं की आपूर्ति से सामाजिक पारिवारिक संतुलन बिगड़ने लगता है

समाज में पाए जाने वाले अप मूल्यों को दूर करने के लिए मुकर्जी ने दो प्रकार के उपायों की बात की है।

- प्रथम सुधारात्मक-विघटित या विचलित व्यवहार वाले व्यक्तियों का सामाजिक एकीकरण किया जाए जिससे उनके व्यवहार में सुधार किया जाए।
- रचनात्मकता-विघटित या विचलित व्यक्तियों का पुनर्वास किया जाए।
- संदर्भ सूची-

-सिंह ,जेपी ,समाजशास्त्र की अवधारणा एवं सिद्धांत prentice-hall लिमिटेड दिल्ली 2002 पृष्ठ संख्या 164

मुकर्जी ,राधाकमल ,सामाजिक विचारक, विवेक प्रकाशन दिल्ली 2012 पृष्ठ संख्या 541